Kuwait Journal of Education
ISSN: 2984-7656
Vol 4 Issue 1 (2026)

''खालसा पंथ का ऐतिहासिक अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता''

मनदीप कौर

शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री कुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान

डॉ0 महेश चन्द्र

शोध, पर्यवेक्षक, सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, श्री कुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान

प्रस्तावना

गुरू गोबिन्दसिंह जी सिक्ख इतिहास के सबसे प्रेरणादायक और प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक थे। उनका जीवन, शिक्षाएँ और नेतृत्व खालसा पंथ की स्थापना के साथ– साथ भारत के धार्मिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में एक गहरा प्रभाव छोड़ते है। उन्होंने जहाँ एक ओर अध्यात्मिकता, कवित्व और दर्शन को बढ़ावा दिया, वहीं दूसरी ओर अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध खड़े होकर एक योद्धा सन्त का आदर्श प्रस्तुत किया। खालसा पंथ की स्थापना केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक क्रान्ति की शुरूआत भी जिसमें मानवता समानता, सेवा और बलिदान के मूल्यों को सर्वउच्च स्थान दिया गया।

खालसा पंथ सिक्ख धर्म की एक विशेष शाखा है जिसकी स्थापना श्री गुरू गोविन्द सिंह जी ने 13 अप्रैल 1699 को श्री आनंदपुर साहिब में की। खालसा का अर्थ होता है '**शुद्ध**', '**पवित्र**' या **ईश्वर** के सीधे अधीन। यह पंथ उन लोगों का समुदाय होता है जो गुरमत सिद्धान्तों, अनुशासन और मर्यादा के अनुसार जीवन व्यतीत करते है। खालसा पंथ का उद्देश्य धर्म की रक्षा, अन्याय के विरूद्ध संघर्ष और मानवता की सेवा करना है। 17वीं शताब्दी में जब भारत में असहिष्णुता, अत्याचार और सामाजिक न्याय अपने चरम पर थे, तब गुरू गोविन्द सिंह जी ने एक ऐसा सम्प्रदाय खड़ा किया जो न केवल अध्यात्मिक रूप से समर्पित हो बल्कि सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर भी सजग, सक्रिय और साहसी हो। इस पंथ के अनुयायी धर्म और मानवता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान देने को तत्पर रहते हैं।

जो कि एक साहसी, अनुशासित और धर्म निष्ठ समाज की संकल्पना थी, इससे भारतीय सामज में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। गुरू गोविन्द सिंह जी ने पाँच प्यारों को सामने लाकर जात–पात, ऊँच–नीच और जातिगत भेदभाव का अंत किया सबको समानता का अधिकार दिया।

खालसा पंथ के केवल धार्मिक व्यवस्था नहीं थी बल्कि यह सामाजिक सुधार आंदोलन था। यह पंथ सेवा, साहस, त्याग और सत्य के सिद्धान्तों पर आधारित था। गुरू गोविन्द सिंह जी ने संत – सिपाही की धारणा दी। जो व्यक्ति धर्म में स्थिर हो और अन्याय के विरूद्ध खड़ा हो सके। यह विचार आज भी प्रासंगिक है, जब समाज को नैतिक और अध्यात्मिक नेतृत्व की आवश्यकता है।

गुरू गोबिन्द सिंह जी का साहित्यिक योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने **'दसम ग्रंथ'** '**चंडी दी वार**', **'अकाल उस्तत'** जफरनामा आदि ग्रंथों की रचना की। इन रचनाओं में धार्मिक

चेतना, वीर रस, ईश्वर– भक्ति और न्यायप्रियता के भाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। जफरनामा जो उन्होंने औरंगजेब को लिखा, न केवल एक राजनीतिक पत्र था, बल्कि धर्म नैतिकता का उद्‌घोष भी था।

वर्तमान समय में, जब सामाजिक असमानता, धार्मिक कट्टरता और नैतिक पतन की प्रवृत्तियां बढ़ रही है, गुरू गोविन्द सिंह जी की शिक्षाएँ और खालसा पंथ का दर्शन समाज के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक बन सकता है। उनकी शिक्षाएँ हमें सत्य, धर्म, सेवा और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। इस शोध का उद्देश्य गुरू गोविन्द सिंह जी के जीवन और शिक्षाओं का अध्ययन कर यह समझना है कि उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना क्यों की कैसे की उसका तत्कालीन व समकालीन समाज पर क्या प्रभाव पड़ा यह अध्ययन न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

खालसा सिखों को पाँच प्रतीक धारण करने अनिवार्य है केश (बाल) कड़ा, कृपाण, कंघा और कच्छा। पुरूषों के लिए 'सिंह' और महिलाओं के लिए 'कौर' नाम को अनिवार्य किया गया। जिससे जाति और वर्गभेद की समाप्ति हो सके। खालसा सिक्खों को शस्त्रधारी यौद्धा बनाया गया जो धर्म की रक्षा और पीड़ित मानवता, की सेवा में समर्पित रखते है। खालसा पंथ का उद्देश्य संपूर्ण मानवता की भलाई है न कि केवल एक धर्म या जाति की।

खालसा पंथ ने सिक्ख धर्म को एक नया रूप, नई ऊर्जा और नया दृष्टिकोण दिया। इसने सामाजिक समानता, धार्मिक स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धान्तों को मजबूती प्रदान की। खालसा पंथ का आदर्श एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ कोई भी व्यक्ति न तो डरे न झुके और न ही घमंड के कारण किसी को झुकाएँ।

खालसा पंथ केवल एक धार्मिक समुदाय नहीं है, बल्कि यह एक जीवन पद्धति है जो साहस, सेवा और त्याग पर आधारित है। गुरू गोविन्द सिंह जी की यह प्रेरणादायक आज भी लाखों लोगों को धर्म, कर्त्तव्य और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

खालसा पंथ के मुख्य सिद्धान्त केवल एक ईश्वर में विश्वास, सभी मानवों की समानता जातिवाद, ऊँच – नीच और अंधविश्वास का विरोध 'नाम जपों', कीरत करो, वंड छकों का पालन करना तथा सत्य, न्याय और परोपकार के लिए जीवन अर्पण करना है।

खालसा पंथ ने भारतीय समाज में सम्मानता, सेवा और न्याय की भावना को मजबूत किया। लंगर की परंपरा, जातिवाद का विरोध और सभी धर्मो के प्रति सहिष्णुता जैसे आदर्श खालसा के योगदान है।

आज खालसा पंथ एक वैश्विक पहचान बन चुका है। विश्वभर में बसे सिक्ख समुदाय खालसा की शिक्षाओं के अनुसार सेवा भाईचारे और धर्म की रक्षा में लगे हुए है। आधुनिक सिख युवाओं को खालसा की शिक्षाओं से जोड़ने के प्रयास निरन्तर किये जा रहे है।

खालसा पंथ केवल एक धार्मिक समुदाय नहीं बल्कि एक क्रान्तिकारी आंदोलन है। जिसने धर्म समाज और राजनीति तीनों क्षेत्रों में शहरी छाप छोड़ी है। गुरू गोविन्द सिंह जी द्वारा स्थापित यह पंथ आज भी '**संत – सिपाही**' के स्वरूप में मानवता की सेवा और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष का प्रतीक बना हुआ है।

Kuwait Journal of Education
ISSN: 2984-7656
Vol 4 Issue 1 (2026)

गुरू गोबिन्द सिंह जी

जन्म और परिवार :–

गुरू गोबिन्द सिंह जी का जन्म 22 दिसम्बर 1666 ई. को बिहार राज्य के पटना साहिब में हुआ था। उनके पिता नाम श्री गुरू तेग बहादुर जी था, जो सिखों के नौवें गुरू थे। माता का नाम गुजरी जी था। गुरू गोबिन्द सिंह जी का बचपन का नाम गोबिन्द राय था।

उनके जन्म के समय भारत पर मुगल साम्राज्य का शासन था और औरंगजेब के कठोर इस्लामी फरमानों ने हिन्दु धर्म और अन्य धर्मो के अनुयायियों का जीवन कठिन बना दिया था। ऐसे विकट समय में गुरू गोबिन्द सिंह जी ने जन्म लेकर एक नये युग की नींव रखी।

बाल्यकाल :–

गोबिन्द राय का बचपन पटना में बीता। वहीं पर उन्होंने संस्कृत, फारसी, ब्रजभाषा, गुरूमुखी और अन्य भाषाओं का अध्ययन किया। बचपन से ही उनमें अद्‌भुत चेतना, निर्भीकत्ता और नेतृत्व क्षमता के लक्षण दिखाई देने लगे थे बालक गोबिन्द राय ने अपने आस–पास के बच्चों को एकत्र कर युद्ध कौशल और स्वाभिमान की शिक्षा दी।

उनकी बाल्यावस्था में ही माता गुजरी जी उन्हें श्री आनंदपुर साहिब लेकर चली आई, जहाँ उनका लालन – पालन हुआ और उन्होंने शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा ग्रहण की।

गुरूगद्दी प्राप्ति :–

अपने पिता के बलिदान के बाद मात्र नौ वर्ष की आयु में गोबिन्द राय ने सिख पंथ की बागडोर संभाली। गुरू गोविन्द सिंह जी ने बचपन से ही समाज में व्याप्त कुरीतियों और अन्याय का डटकर विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने सिक्खों को एकजुट रहने, अत्याचार के विरूद्ध शस्त्र उठाने और धर्म की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने का उपदेश दिया।

आनंदपुर साहिब की स्थापना :–

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आनंदपुर साहिब को अपने कार्यो का मुख्य केन्द्र बनाया। यहाँ उन्होंने एक सैन्य शक्ति तैयार की। उन्होने अपने अनुयायियों को शस्त्र और अस्त्र दोनों का ज्ञान दिया। उनके नेतृत्व में सिख समुदाय ने एक सैन्य अनुशासन और धार्मिक चेतना का अद्‌भुद संगम देखा।

खालसा पंथ की स्थापना :–

गुरू गोबिन्द सिंह जी के जीवन की प्रमुख घटना 1699 ई. में बैसाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की। उन्होंने आनंदपुर साहिब में विशाल सभा का आयोजन किया। हजारों लोग एकत्र हुए। उन्होंने सभा में खड़े होकर पाँच सिरों की मांग की। एक – एक करके पाँच श्रद्धालु गुरू जी के पास आए। गुरू जी ने उन्हें अमृत छकाया और 'पंज प्यारे' बनाए।

इन्हीं पाँचों को गुरू जी ने 'खालसा का नाम दिया' शुद्ध, निर्मल, निर्भय और गुरू का सच्चा सिपाही। उन्होंने सिक्खों को पाँच कंकार – केश, कड़ा, कंघा, कच्छा और कृपाण धारण करने का

आदेश दिया। खालसा पंथ की स्थापना ने सिक्ख समुदाय को एक संगठित और सैनिक शक्ति बना दिया, जो अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध लडेगी।

गुरू गोबिन्द सिंह जी के युद्ध :–

गुरू गोबिन्द सिंह जी का जीवन निरंतर संघर्षमय रहा। उन्होंने आनंदपुर साहिब में कई बार मुगल सेनाओं और पहाड़ी राजाओं के गठजोड़ से युद्ध किया। गुरू जी ने चमकौर का युद्ध, भंगानी का युद्ध, नादौन का युद्ध जैसे कई ऐतिहासिक युद्ध लड़े। इन युद्धों में उन्होंने न सिर्फ अपने साहस का परिचय दिया बल्कि अपने अनुयायियों को धर्म की रक्षा हेतु मर मिटने की प्रेरणा दी।

परिवार का बलिदान :–

गुरू गोबिन्द सिंह जी के चार पुत्रे थे – साहिबजादा अजीत सिंह, साहिबजादा जुझार सिंह, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह। चमकौर के युद्ध में उनके दो बड़े पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह शहीद हो गए। उनके छोटे पुत्रों जोरावरसिंह और फतेह सिंह को सरहिंद के नवाब वजीर खान ने जीवित दीवार में चिनवाकर शहीद कर दिया। माता गुजरी जी को भी गढ़ी सरहिन्द में प्राण त्यागने पड़े। इतनी बड़ी व्यक्तिगत क्षति के बावजूद गुरू गोबिन्द सिंह जी का हौंसला अडिंग रहा। उन्होंने कहा – इन पुत्रों के मरने से क्या हुआ, हजारों पुत्र खालसा के रूप में जीवित है।

साहित्य सृजन :–

गुरू गोबिन्द सिंह जी एक महान योद्धा ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के साहित्यकार भी थे। उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की। जिनमें जफरनामा चण्डी दी वार, दशम ग्रंथ प्रमुख थे उन्होंने अपनी लेखनी से वीर रस, भक्ति भाव और अरम्य साहस को अभिव्यक्त किया। जफरनामा, जिसे उन्होंने औरंगजेब को पत्र के रूप में लिखा, उसमें गुरू जी ने अन्याय, कपट और क्रूरता की तीव्र निंदा की और धर्म के पक्ष में डट जाने का आह्मन किया।

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आदेश दिया कि गुरू ग्रंथ साहिब ही सिखों के अन्तिम गुरू होगें। उन्होने कहा, सब सिखन को हुकम है गुरू मान्यो ग्रंथ। उन्होंने व्यक्तिगत गुरूगद्दी की परंपरा को समाप्त कर दिया और गुरू ग्रंथ साहिब को शाश्वत, गुरू का दर्जा दिया। इस निर्णय ने सिख धर्म को एक मजबूत आधार दिया।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में गुरू गोबिन्द सिंह जी ने मुगल साम्राज्य के विरूद्ध मराठा, सरदारों और अन्य हिन्दू शक्तियों को संगठित करने की कोशिश की। उन्होंने दक्षिण भारत के नांदेड़ में हजूर साहिब को अपनी अन्तिम कर्मभूमि बनाया। वहीं एक पठान ने धोखे से उन पर प्राणघातक हमला किया। घाव गभीर था। 7 अक्टूबर 1708 को गुरू गोबिन्द सिंह जी ने नांदेड़ में अपने पार्थिव शरीर को त्याग दिया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ सूची :–

1. **''महान कोश''** – भाई काहन सिंह नाभा, 1930
2. **''राष्ट्र नायक गुरू गोबिन्द सिंह''** – हंसराज रहवर, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2011
3. **''सिक्ख धर्म और संस्कृति''** – डॉ0 अमर सिंह विधान, 2006
4. **''सिख राज''** – ज्ञानी सोहन सिंह शीतल 2011
5. **''श्री कलंगीधर''**– चमत्कार भाई वीर सिंह 2010

English

1.. "A Short History of the sikh's" Dr. Khushwant Singh 1963.
2. "Earty Sikh Scriptural Tradition" - Myth and Reality. Balwant Singh Dhilloo. 1999
3. "Evolution of the Khalsa" Vol 1 Inder Bhushan Banrji 1936
4. "Guru Gobind Singh A Multi" - Faceted Personality Surinder Singh Johar. 1999
5. "Guru Gobind Singh and Creation of Khalsa" Guru Nanak Dev University Amritsar, 2000
6. "Sikhs of the Khalsha: A History of the Khalsa Rahit" W.H.Mclead, Publish - Oxford University Press. 2003
7. "Guru Govind Singh (1666-1708)" : Master of the white How. J.S. Grewal, Publisher - Oxford University Press New Delhi. 2020